Dr. Gautam Kumar
BA(H) part-I
Paper-II

गाँधीजी के सत्याग्रह संबंधी विचार
(Gandhijee's thoughts on satyagrah)

सत्याग्रह का सिद्धांत गाँधीजी की राजनीतिक चिन्तन की एक अद्वितीय और अनूठी देन है। यह सामाजिक परिवर्तन का एक क्रांतिकारी साधन है जो सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है- सत्य के लिए आग्रह करना। अर्थात सत्य पर अटल रहना अथवा सत्य से उत्पन्न होने वाले प्रेम तथा अहिंसा की शक्ति। यह शारीरिक बल अथवा शस्त्रों की भौतिक शक्ति से सर्वथा भिन्न है। यह आत्मा की शक्ति है। सत्याग्रह का संचालन आत्मिक शक्ति के आधार पर किया जाता है। सत्याग्रह के सम्पूर्ण दर्शन का आधारभूत सिद्धांत यह है कि सत्य की ही जीत होती है। गाँधीजी ने अहिंसा के सिद्धांत को मूर्त रूप देने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में जिस कार्य पद्धति का प्रयोग किया वह सत्याग्रह है।

स्वयं गाँधी जी के शब्दों में, "अपने विरोधियों को दुःखी बनाने के बजाय, स्वयं अपने पर दुःख डालकर सत्य की विजय प्राप्त करना ही सत्याग्रह है" सत्याग्रह शक्तिशाली और वीर मनुष्य का शस्त्र है। इसके नाम और मौलिक सिद्धांतों का विकास दक्षिण-अफ्रीका में किया गया। वहाँ की गोरी सरकार भारतीयों के प्रति अन्यायपूर्ण कानून पास कर रही थी। इससे वहाँ बसे भारतीयों में तीव्र रोष एवं असन्तोष था। उन्होंने गाँधी के नेतृत्व में इस अन्याय का अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का निश्चय किया। सत्याग्रह, तो सत्य की विजय हेतु किए जाने वाले आध्यात्मिक और नैतिक संघर्ष का नाम है।

Scanned with CamScanner

सत्याग्रह का दार्शनिक आचार - सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिए आग्रह करते हुए अत्याचारी का प्रतिरोध करना। उसके सामने सिर को न झुकाना तथा उसकी बात को नहीं मानना। अत्याचारी और अन्यायों को तभी सफलता मिलती है, जब लोग भयभीत होकर उसके सामने घुटने टेक देते हैं किन्तु यदि लोग साहस और हिम्मत से काम लें तथा यह दृढ़ता पूर्वक संकल्प कर लें कि तुम चाहे जो भी कर लो हम तुम्हारी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे, तो अत्याचारी शासक उन्हें हानि पहुँचा सकता है किन्तु उससे अपनी आज्ञा का पालन नहीं करा सकता। जब वह इस बात से निश्चय हो जाता है कि वह अपने प्रजाजनों को मार डालने पर भी अपनी इच्छा उससे नहीं मनवा सकता है तो वह प्रजा का दमन करना निरर्थक समझता है और उसे छोड़ देता है। इसके अतिरिक्त उसके हृदय पर सत्याग्रहियों द्वारा झेली जाने वाली कठोर यातनाओं और कष्टों का भी प्रभाव पड़ता है। सत्याग्रही द्वारा प्रसन्नतापूर्वक कष्ट झेलने से अत्याचारी में मनुष्यता की भावना आ जाती है। उसे अपने किए अत्याचारों पर पश्चाताप होने लगता है। उस समय वह सत्याग्रहियों से समझौता कर लेता है और सत्याग्रही की विजय होती है। यह आत्मबल द्वारा अत्याचारी के हृदय परिवर्तन पर बल देने वाली प्रक्रिया है।

सत्याग्रह के गुण - सत्याग्रह के 11 गुण निम्न प्रकार हैं :-
(i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अस्तेय (iv) ब्रह्मचर्य (v) अपरिग्रह (vi) शारीरिकश्रम (vii) निर्भयता (viii) स्वदेशी (ix) अस्वाद (x) अस्पृश्यता निवारण (xi) सभी को समानदृष्टि से देखना।

Scanned with CamScanner